आज का पुरुषार्थ 23 June 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" आज अपनी भाग्य की प्राप्तियों में खो जाना है .. जो स्वयं भगवान की पालना हमें मिल रही है .. कितनी बड़ी प्राप्ति है यह "*

हम सभी ब्राह्मण कुलभूषण इस संसार में सबसे अधिक **भाग्यवान** है। क्योंकि **परमात्म पालना** में पल रहे है। रोज सवेरे स्वयं भगवान हमें जगाते है। रात को सुलाने आते है। **ब्रह्माभोजन** खिलाते है।

कितनी बड़ी बात है कि सवेरे वह अपना **धाम** छोड़कर हमें पढ़ाने आ जाते है। भगवान के इस पढ़ाई से रोज दिल दिमाग हल्का हो जाता है और **मन** खुशियों में नाचने लगता है।

सतगुरु बनकर वो ऐसी **पालना** करते है, और कुछ भी जानना बाकी नहीं रहता। जीवन जीने की कला सिखाते है। क्या करें और क्या न करें, हर कदम पर कैसे आगे बढ़े, यह सब गाइडलाइन परम सदगुरू के रूप में वो हमें देते है।

और **परमात्मा परमपिता** के रूप में हमें इतना प्यार देते है कि उस प्यार में हम दुनिया को भूल जाते है, देह को भी विस्मृत हो जाते है। और खो जाते है उसके प्यार में।

संसार के सभी उलझनें भूल जाती है। देहधारियों के दुःखदाई प्यार, मोह, ममता सब समाप्त होने लगता है।

तो आइये हम इस पुरुषोत्तम **संगमयुग** की प्राप्तियों को याद करें। स्वयं भगवान हमारा हो गया। अपने धाम छोड़कर वो हमारी सेवा में उपस्थित हो गया।

राज्यभाग्य ताज़ और तिलक साथ में लेकर हमारे पास आ गया। और कहाँ *" बच्चे यह सब तुम्हारे लिए है .. अपना सिर आगे करो .. मैं तुम्हारे सिर पर ताज़ रखुँ "*

सिर आगे करो अर्थात .. समर्पित कर दो अपना सर्वस्व मुझें .. **अपने मन के सारे संकल्प** ..

अपने **बुद्धि के सबकुछ**, जो कुछ उसमें भरा है .. पूर्व से जो ज्ञान भरा है .. जो सत्य ज्ञान नहीं था .. उनको भी बाबा को समर्पित कर दो "

ताज़ मिलेगा, कितनी बड़ी प्राप्ति। दिव्य बुद्धि देने आ गया है। भाग्य की रेखाएं हमारे हाथ के द्वारा खिंचवाने आ गया है। श्रेष्ठ भाग्य, राज्य भाग्य लेकर ही हमारे सामने उपस्थित हुआ है।

अपने श्रेष्ठ वायब्रेशन्स और अपनी शक्तिशाली दृष्टि रोज़ हमें देता है। कितनी बड़ी प्राप्तियाँ है यह। इनसे कभी वंचित नहीं होना चाहिए।

कितना बड़ा अधिकार उसने हमें दे दिया ...

" आँख खुलते ही मुझसे मिलन मनाओ .. वरदान लो .. शक्तियाँ लो .. समस्याओं का समाधान लो .. बाप भोला बनकर बैठा है .. जो चाहे लो "

कितना बड़ा भाग्य है! स्वयं भगवान सामने बैठकर कह रहा है .... **" बच्चे जो चाहे ले लो** "

तो आइये हम ऐसे सर्वश्रेष्ठ सत्ता को पाकर पूर्णतया सुखी हो जाये, शान्त हो जाये। अपने चित्त को निर्मल कर दे। यह बातें करनी है अपने से ...

" मुझे बहुत सुखी होना है .. शान्त होना है .. विकारों की अग्नि को शान्त करके चित्त को निर्मल करना है "

" यदि भगवान को पाकर मैं ही सुखी नहीं हूँगी तो भला और कौन होगा? यदि सर्वश्रेष्ठ पालना के बाद मैं आत्मा ही संतुष्ट मणि न बनी तो संसार में धन के पीछे भागने वाले लोग भला संतुष्ट कैसे होंगे? "

तो हम अपने संस्कारों को दिव्य बना ले और याद रखें, जैसे संस्कार इस समय हम धारण करेंगे वही संस्कार पूरा कल्प हमारे साथ चलेंगे।

आज सारा दिन हम अभ्यास करेंगे ...

" हमारे वायें तरफ ब्रह्मा माँ हमें बहुत प्यार से निहार रही है .. उनकी मस्तक से शीतलता की किरणें हमें मिल रही है ...

हमारी डायें तरफ ऊपर ज्ञान सूर्य शिवबाबा .. उनकी तेजस्वी शक्तियों की किरणें मुझ पर पड़ रही है "

फिर ब्रह्मा माँ से शीतलता की किरणें लेंगे और शिवबाबा से शक्तियों की किरणें लेंगे ... यह क्रम चालु रखेंगे, **योग सहज हो जायेगा**, परम आनन्दकारी हो जायेगा।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org